समकालीन कविता का राग–विराग

डॉ. आर.पी. वर्मा
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
इन्दिरा गॉधी राजकीय महिलामहाविधालय,
रायबरेली, उ.प्र

चिन्तन एवं विवेकशील व्यक्ति का व्यक्तित्व समाज–सापेक्ष होता है। समसामयिक विद्रूपताएं, कट्टर मान्यताएं, अप्रिय घटनाएं एवं विसंगतियों से उत्पन्न विडम्बनात्मक परिस्थितियाँ उसके चित्त को झकझोरती हैं, उसके अन्तःजगत को आन्दोलित करती हैं फिर वह व्यक्ति उस समस्या को शब्दों का प्रश्रय अथवा आलंबन लेकर अभिव्यंजित करता है। कविता भी एक ऐसा मजबूत एवं प्रभावोत्पादक साधन है जहाँ इसमें समष्टि एवं व्यष्टि से संबंधित सरोकार मुखरित होते हैं वही कविता इन सरोकारों एवं समस्याओं का निदान भी प्रस्तुत करती है। आदिकालीन कवि सरहपा, स्वयंभू से लेकर समकालीन कवि लीलाधर जगूड़ी, अशोक बाजपेयी, मदन कश्यप, सभी कवियों ने कविता को माध्यम बनाकर अपने उद्गारों, प्रत्यक्ष अनुभूतियों, एवं चिन्ताओं को अभिव्यक्त किया है। समकालीन कविता के राग, रंग, कथ्य संवेदना, मान्यताएँ, वैचारिक सरोकार, ध्वन्यार्थ को जानने से पूर्व समकालीन कविता की सैद्धान्तिकी, उसके मर्म को जानना आवश्यक है। डॉ. उपाध्याय ने समकालीन कविता में 'वर्तमान के प्रत्यक्ष यथार्थ' को अनिवार्य माना है– "समकालीन कविता अपने समय के मुख्य अन्तर्विरोधों और द्वन्द्वों की कविता है। समकालीन कविता में जो हो रहा है (बिकमिंग) का सीधा खुलासा है, इस कविता को पढ़कर वर्तमान काल का बोध हो सकता है, क्योंकि इसमें जीते, संघर्ष करते, लड़ते, बौखलाते, तड़पते–गरजते तथा ठोकर खाकर सोचते वास्तविक मानव का परिदृश्य है।"

नंदकिशोर नवल ने समकालीन कविता को राजनीतिक कविता का संबोधन दिया है। इनके अनुसार समकालीन कविता का मुख्य एजेंडा भ्रष्ट व्यवस्था के प्रति विरोध का बिगुल है, "समकालीन कविता का प्रमुख नारा है, 'व्यवस्था का विरोध' यह विरोध सही ढंग से किया जा रहा हो, या गलत ढंग से, लेकिन इनमें कोई शक की बात नहीं है कि वह विरोध राजनीतिक है। इस प्रकार समकालीन कविता मूलतः राजनीतिक है।"

डॉ. हुकुमचन्द राजपाल ने भी समकालीन कविता और राजनीति के अन्योन्याश्रित संबंधो को स्वीकार कर समकालीन कविता को जीवन एवं समाज के यथार्थ का प्रस्तुतीकरण माना है– "समकालीन कविता आदर्श को बिल्कुल नकारती है, वह जीवन और समाज के यथार्थ स्वरूप को व्यंजित करने में विश्वास रखती है। आज की विसंगतियों को ज्यां का त्यों वर्णित करना उसका लक्ष्य है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण तत्व समकालीन कविता का राजनीति से पूर्णतः सम्बद्ध होना है। यही राजनीतिक सम्बद्धता या समझ कवि में इतिहासबोध की मानसिक स्थिति का उत्स है।" युग चिंतन, युग प्रतिबद्धता, युग–सापेक्षता समकालीनता के निकष है। हिन्दी कविता में समकालीनता के कुछ अंकुर साठा के आसपास प्रस्फुटित होने लगे तो स्वातंत्र्योत्तर मोहभंग की उपज है। आगे चलकर अपात्काल और शासन की जननिरपेक्ष नीतियों की प्रतिक्रिया ने हिन्दी कविता को और युगानुरूप व युग प्रतिबद्ध साबित कर दिया। नब्बे के दशक तक आते–आते

भूमण्डलीकरण के बढ़ते शोषण तंत्र के सामने प्रतिरोध एवं प्रतिकार की प्रचण्ड ऊर्जा लेकर हिंदी कविता ने अपने समकालीन होने की पूर्ण गवाही दी। शिव कुमार मिश्र ने समकालीन कविता की समय की नब्ज़ को पकड़कर उससे मुठभेड़ करने वाली कविता की संज्ञान दी है "कठिन युनौतियों के बीच जन्म लिया है उससे शिद्दत भरा कवि कर्म रहा है, उससे जुड़ने वालों का। बावजूद इसके समकालीन कविता कलंकित कविता है, काल से सीधे आँखे मिलाने वाली, उससे मुठभेड़ करने वाली कविता है।"

कुमार कृष्ण ने समकालीन कविता के धरातल अथवा कथ्य को पूर्ववर्ती रचना संसार से विलग मान दुनिया के आत्मसंघर्षों, पराजयों, नैराश्य तथा उनमें मिली भीतरी तनाव प्रतिक्रियाओं की काव्यात्मक परिणतियां माना है "समकालीन कविताओं की कविताएँ अपने पूर्ववर्ती रचना–संसार से लग नयी बेचैन दुनिया के आत्मसंघर्षों, पराजयों तथा उनसे मिली आतंरिक तनाव प्रक्रियाओं की काव्यात्मक परिणतियाँ है। मैं इसी तनाव को कविता की रचना का कारण मानता हूँ। कविता मनुष्य के तनावों को व्यवस्था प्रदान करती है। यही कारण है कि आज संगीत का स्थान उसी तनाव ने ले लिया है। कविता में आज तनाव का संगीत है। उसकी लय तनाव की लय है। उसका संसार तनाव का संसार है।"

डॉ. बलदेव वंशी समकालीन कविता में विचार को अधिक महत्व देते हैं। इनका मानना है कि विचार के कारण ही समकालीन कविता का पृथक वौजूद है। आज की कविता का मुख्य प्रेरक बिंदु विचार है। यों कहेंगे कि इस काव्यधारा की कविताओं का संकेन्द्रक विचार है। यही विचार बिन्दु उसे अन्य प्रकार की कविताओं से पृथक् पहचान देता है। यह विचार जहां उसे एक ओर मध्यकालीन बोध से अलग करके आधुनिकता से जोड़ देता है, वहां नयी कविता, अकविता, और प्रतिबद्ध कविता से भी अलग करता है। इस धारा की समकालीन कविताओं में विचार संपूर्ण संरचना को समाया हुआ है, न कि कविता में अलग से रखा हुआ है।"

धूमिल समकालीन कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। अपने चिंतन एवं वैचारिक प्रवाह द्वारा इन्होंने समकालीन कविता को पोषित किया। अपनी सपाटबयानी द्वारा इन्होंने विकृत राजनीति, राजनीतिक प्रपंचों, निकृष्ट राजनीतिक दांवपेचों, संसद की अपराध एवं अपराधियों के प्रति निष्क्रियता, राजनीतिज्ञों के घिनौनें रूप के विभिन्न उपादानों को प्रस्तुत किया। वास्तव में धूमिल राजनीतिक विश्लेषक के रूप में कविता में विस्फोट करते हैं तथा राजनीति के विभिन्न तंतुओं को परत–दर–परत उधेड़ते हैं। धूमिल ने राजनीतिज्ञों की मानसिकता, उनकी स्वयं को पोषित करने की नीति, सामान्य वर्ग को वाग्जाल में फंसाने की वक्तृया का चित्रण अपने काव्य कर सामान्य जन को उनके विरुद्ध चेतना प्रदान की है। अपने काव्य संग्रह "संसद से सड़क तक" में वे लिखित हैं –

दरअसल–अपने यहाँ जनतंत्र
एक ऐसा तमाशा है
जिसकी जान
मदारी की भाषा है।

जिस प्रकार मदारी अपनी भाषा के चमत्कार से एकत्रित भीड़ को ठग लेता है ठीक उसी प्रकार राजनीतिक आका चुनावों से पूर्व अपने कलात्मक भाषणों द्वारा निरक्षण जनता को भ्रमित कर सत्ता पर आरूढ़ हो जाते हैं। समकालीन कवियों में श्रीकांत वर्मा ने काव्य जगत में अपनी महती उपस्थिति दर्ज करवाई है। समकालीन विद्रूपताओं एवं विसंगतियों को शब्दों के माध्यम से उकेर, शासनतंत्र की निरंकुशता, अन्याय भ्रष्टाचार, व्यभिचार, राजनीति से लुप्त होते ईमान, मूल्य, सत्य के प्रति गहरी संवेदनाएँ अभिव्यक्त की हैं। 'मायादर्पण' नामक काव्य–संग्रह में इन्होंने कवि

गायक पत्रकार, राजनीतिज्ञों सभी को कटघरे में खड़ा किया है। वास्तव में इन सभी का जीवन समाज एवं राष्ट्र के लिए होता है। यह सभी अपनी निष्पक्ष साधना द्वारा समाज को जाग्रत एवं संचालित करते हैं किंतु विडम्बना यह है कि आज अर्थ प्रधान सोच ने सभी तरह की नीतियों नैतिकता, संस्कारों को ध्वस्त किया। सभी किसी–न–किसी तरह मोल बिकने लगे। प्रतिभा का विनिमय होना आरम्भ हुआ। श्रीकांत वर्मा ने दूषित, प्रदूषित होती इस वसुंधरा के प्रति गहन चिंतन व्यक्त किया है। बलात्कार, घूसखोरी, घोटाले, आतंकवाद ने इस पृथ्वी को कलुषित एवं मलिन कर दिया। आज बुद्धिजीवियों द्वारा चिंता का विषय उपर्युक्त विषय नहीं है वह तो राजनीतिज्ञों के पिछलग्गू बन उनकी विरुदावलियां गा रहे हैं–श्रीकांत वर्मा लिखते हैं–

झूठे हैं समस्त कवि
गायक
पत्रकार
आत्माएँ
राजनीतिज्ञों की
बिल्लियों की तरह
मरी पड़ी हैं
सारी पृथ्वी से
उठती है
सड़ांध....8

चंद्रकांत देवताले की कविताओं का उत्स उपेक्षित, शोषित, पीड़ित वर्ग है यद्यपि कहने को प्रजातंत्र है, किन्तु वास्तव में प्रजा पायदान पर और तंत्र मजबूत हो गया है। गुण्डाराज सर्वत्र व्याप्त है। स्त्रियों का शारीरिक शोषण और नाबालिग बच्चे घरेलू स्थिति खराब होने के कारण शिक्षा प्राप्त करने की अपेक्षा रेस्तरां, घरों, दुकानों में कार्यरत है। प्रजातंत्र के इस रथ के तले सभी पीसे जा रहे हैं और आम आदमी सत्ता के खौफ से मूकदर्शक बना सब देख रहा है। चंद्रकांत देवताले ने लोकतंत्र के इसी सत्य को उद्घाटित किया है अपने काव्य–संग्रह आग हर चीज में बतायी गयी थी में वे प्रजातंत्र के इन्हीं तथ्यों को सार्वजनीन करते हैं–

प्रजातंत्र की रथयात्रा निकल रही है
औरतों और बच्चों को रौंदा जा रहा है
गुंडों और चोरों की ताकत से हत्प्रभ लोग
खामोश खड़े हैं

राजेश जोशी ने अपनी कविताओं द्वारा समाज के प्रत्येक विषय को अभिव्यक्ति दी है। प्रत्येक कविता किसी–न–किसी गंभीर अर्थ को धारण किये हुए हैं भले ही इनकी कविता 'विडम्बना' हो या 'पागल'। कविताओं के शीर्षक ही आगे की दास्तां बयां कर देते हैं। समकालीन कवि किसी शक्ति, सत्ता, राजनीतिक आकाओं, प्रपंचों प्रलोभनों के आगे झुकने वाला नहीं है। वह स्वाभिमान एवं आत्मबल से ओत–प्रोत है। वह किसी के दबाव में नहीं है। 'मैं झुकता हूँ' कविता में कवि राजेश जोशी अपनी इसी प्रवृत्ति को व्यक्त करते हुए लिखते हैं–

झुकता हूँ लेकिन उस तरह नहीं
जैसे एक चापलूस की आत्मा झुकती है
किसी शक्तिशाली के सामने
जैसे लज्जित या अपमानित होकर झुकती हैं
आंखे
झुकता हूँ
जैसे शब्दों को पढ़ने के लिए आँखें झुकती हैं।

देवेन्द्र दीपक ने अंत्यज की व्यथा की कथा अपने काव्य में प्रस्तुत की है। दलित समाज की परिस्थितियां, उनका जीवन उकेरने में इन्हें महारत हासिल है। अपने काव्य–संग्रह मेरी इतनी सी

बात सुनो में इन्होंने सदियों से चली आ रही एक वृहत समाज की लोमहर्षक त्रासदी को उसके अनुकूल सौन्दर्यशास्त्र के माध्यम से प्रस्तुत करने का भगीरथ प्रयास किया। आज दलित साक्षर, चेतना युक्त, अधिकार बोध से सम्पन्न है। उसमें एक अभूतपूर्व एवं अश्रुतपूर्व जागृति का प्रस्फुटन हुआ है। वह अब स्थितियों से भयभीत होने वाला नहीं। वह अब एक अद्भुत शक्ति, अप्रतिम चेतना, अद्वितीय अधिकारों से लबरेज़ है। देवेन्द्र दीपक ने अपनी कविताओं में इस ओर इंगित किया है कि दलित अब अपनी कुंभकर्णी निद्रा से जाग्रत हो अपने अधिकारों एवं स्तर को पाने के लिए उद्यत है। वे लिखते हैं –

तुम चतुर सुजान थे
हम निपट अजान थे
हमारा बस इतना–सा था कसूर
हमने बिना प्रश्न किए
मान लिया
तुम्हारा दिया हुआ दस्तूर।

लीलाधर जगूड़ी ने समाज में बढ़ रहे अपराधों की शल्य–चिकित्सा कर यह निष्कर्ष निकाला है कि अपराधों का कारण है गरीबी। एक अकिंचित व्यक्ति जो निर्धनता एवं अभावों से ग्रस्त है, वह कोई भी निकृष्ट अपराध करने के लिए विवश हो जाता है। सरकारी अपराधों के बढ़ रहे सूचकांक को लेकर चिंतित है, किन्तु गरीबी का सूचकांक इन्हें दिखाई नहीं देता। कवि ने गरीबी की बीमारी की संबोधन प्रदान किया है कि और कहा है कि बीमारी को कोई भी चिकित्सक नहीं मिटा सकता।

गरीबी किसी भी अपराध की ओर उसे ले जाने को तैयार है
जो लोग कहते हैं कि अपराध बढ़ रहे हैं।
वे एक बार भी नहीं कहते कि गरीबी बढ़ रही है।
मेडिकल कॉलेज की भीड़ से गुजरते हुए
उसे इलहाम हुआ कि उस जो बीमारी है
उसका नाम गरीबी है और उसे डॉक्टर नहीं मिटा सकते।

ममता कालिया ने जहाँ आत्मकथाओं, उपन्यासों एवं कहानियों के द्वारा स्त्री जीवन को रूपायित किया वहीं कितने प्रश्न करुं, काव्य–संग्रह में इन्होंने रामकथा प्रसंग के द्वारा इन्होंने नारी की बेबसी एवं नियति को आरेखित किया है। ममता कालिया प्रशासनिक मुद्रा में हैं और समाज को कठघरे में खड़ा कर उससे बड़े तीखे प्रश्न करती हैं कि नारी को ही क्यों जीवनपर्यन्त पीड़िता का जीवन भोगना पड़े? वह ही क्यों तिरस्कृत एवं बहिष्कृत होती है? उसे ही क्यों उपेक्षाओं के बाणों से बिंघना होता है? उसे ही क्यों सूचित और कुलटा की श्रेणी में विभाजित किया जाता है? वे प्रश्न करती हैं–

नारी को क्या जीवन–भर
यों ही पीड़ित होना है
शंका से ऊपर नर है
नारी को ही रोना है
अपवित्र सिर्फ नारी ही
होती है क्या जीवन में
क्या पुरुष पान कर आता
पावनता की घृट्टी में।

लीलाधर जगूड़ी ने समकालीन यथार्थ को यथातथ्य एवं यथावत् प्रस्तुत किया है। आज प्रत्येक तरफ एक अशान्त माहौल है। सर्वत्र भोग, हत्यारों, हत्याओं एवं हथियाओं का साम्राज्य है। व्यक्ति इतना आक्रामक, अशान्त, मानसिक विक्षिप्त हो गया है कि वह छोटी सी बात पर दूसरे की हत्या करने के लिए लालायित है। इसी अशान्त अस्थिर, समाज का चित्रण लीलाधर जगूड़ी ने

अपनी कविता "यह भी एक युग है" में किया है। व्यक्ति की संवेदनहीनता एवं यांत्रिकता का चित्रण करते हुए वे कहते हैं–

हत्यारों में भरा, हथियारों से भरा
यह हत्याओं का युग है
यह खून को देखकर निशाने की तारीफ का युग है
यह पसीना नहीं खून बहने का युग है
मृत्युलोक ` यह मर जाने का नहीं
मारे जाने का युग है।

समकालीन कविता आर्थिक वैषम्य पर तीखा व्यंग्य कर उसके कारणों की खोज करती है। समकालीन कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से जनता की विपन्नता के कारणों की भी खोज की है। वर्तमान समय में हर सत्ताधारी आम आदमी का शोषण कर स्वयं का पोषण कर रहा है। डॉ. ब्रजेश अवस्थी इसका चित्रण इन शब्दों में करते हैं–

जिसकी रकम असीम गोदामों में पड़ी है
उन भूखों की भूखों से बड़ी भूख बड़ी है
जो पेट भरे इनका वो अनाज ही नहीं
इनके उदर के घेरे का अंदाज ही नहीं।

समकालीन कवियों के काव्य में पर्यावरणीय चेतना पूरे ध्वज के साथ विद्यमान है चूंकि पर्यावरण का दूषित होना भी सामाजिक सरोकार है तो कवि इस समस्या को कैसे अनदेखा करता। समकालीन कवियों ने जहां दृश्यमान जगत के प्रत्येक कोण का संस्पर्श किया वहीं दूषित वातावरण के प्रति अपनी संवेदना के सैलाब को प्रवाहित किया। कवि नरेश सक्सेना का प्रकृति प्रेम 'एक वृक्ष भी बचा रहे' में परिलक्षित होता है। वे पेड़ों के अस्तित्व को बनाए रखना चाहते हैं ताकि उसमें निवास करने वाली गौरैया, गिलहरियां सुरक्षित रहें। पेड़ों के निरन्तर कटाव के कारण कवि की अन्तिम इच्छा है कि अन्तिम समय में उसके पार्थिव शरीर का दाह–संस्कार बिजली के दाह घर में हो ताकि इस वसुंधरा पर पेड़ों का अस्तित्व बना रहे। वे मानों अपनी अंतिम वसीयत लिखते हुए कहते हैं–

अन्तिम समय में जब कोई जायेगा साथ
एक वृक्ष जायेगा
अपनी गौरैया–गिलहरियों से बिछुड़कर
साथ जायेगा एक वृक्ष
अग्नि मं प्रवेश करेगा मुझसे पहले
लिखता हूँ अंतिम इच्छाओं में
कि बिजली दाह घर में ही मेरा संस्कार
ताकि मेरे बार
एक बेटे और एक बेटी के साथ
एक वृक्ष भी बचा रहे संसार में।

वास्तव में समकालीन कविता मं विडम्बनाओं, विद्रूप यथार्थ, विसंगतियों का यथावत् चित्रण है। स्पष्टवादिता एवं सपाटबयानी में जीवन के वास्तव को प्रस्तुत करना समकालीन कविता का महत्वपूर्ण कार्य है। यही कारण है कि समकालीन कविता को नवीन धरातल, नवीन, कथ्य, नया शिल्प मिला।

संदर्भ

- ✓ विश्वंभरनाथ उपाध्याय (सं) समकालीन की भूमिका, मैकमिलन : नई दिल्ली 1976 पृ. 3–4
- ✓ नन्दकिशोर नवल, राजनीति और समकालीन कविता, आलोचना सम्पादकः नामवर सिंह, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, जनवरी–मार्च 1975, पृ. 36

- ✓ डॉ. हुकुमचन्द राजपाल, समकालीन बोध और धूमिल का काव्य, कोणार्क प्रकाशनः दिल्ली, 1980, पृ. 10
- ✓ कुमारी सुप्रिया के.पी., समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण अवबोध, दक्षिण भारत, संपादक : आय राजवेल, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा : मद्रास, जनवरी–मार्च 2015, पृ. 50
- ✓ कुमार कृष्ण, कविता की सार्थकता, साहित्य निधि : दिल्ली 1986, पृ. 43
- ✓ डॉ. बलदेव वंशी, समकालीन कविता : वैचारिक आयाम, इन्द्रप्रस्थ प्रकाश न : दिल्ली, पृ. 39
- ✓ राकेश कुमार, धूमिल की काव्य चेतना : विविध आयाम, ज्योति प्रकाशनः पटियाला, 1986 पृ. 123
- ✓ डॉ. रतना शर्मा श्रीकान्त वर्मा का आत्मसंघर्ष एवं उनकी कविता, शीतल प्रिंटर्स, जयपुर 2008, पृ. 95
- ✓ चंद्रकांत बांदिवडेकर, चंद्रकांत देवताले की कविता–स्वभाव, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1995
- ✓ राजेश जोशी, चाँद की वर्तनी, नयी दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2006, पृ. 11
- ✓ जनसत्ता, 3 जुलाई, 2016 पु. 8
- ✓ लीलाधर जगूड़ी, खबर का मुँह विज्ञापन से ढका है, वाणी प्रकाशन : नयी दिल्ली, 2008, पृ. 64–65
- ✓ ममता कालिया, कितने प्रश्न करूँ, वाणी प्रकाशन : नयी दिल्ली, 2008 पृ. 54
- ✓ लीलाधर जगूड़ी, अनुभव के आकाश में चाँद, राजकमल प्रकाशन : नयी दिल्ली, 2003 पृ. 16
- ✓ डॉ. एस. फिरोज अहमद (सं) वाड्मय समकालीन हिंदी कविता में आर्थिक चेतना, प्रो. रामहरी काकड़े, जुलाई–सितम्बर 2016, वर्ष 13
- ✓ नरेश सक्सेना, समुद्र पर हो रही है बारिश, राजकमल प्रकाशन : नयी दिल्ली 2001, पृ. 35
- ✓ समकालीन कविता का राग–विराग, डॉ0 अनीश कुमार पृ. 88–95 तक
- ✓ समकालीनता के अर्थों में हिन्दी कविता – संपादक, प्रो0 सुखदेव सिंह मिन्हासन पृ. 95

Copyright © 2016, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.